इस खतरनाक चुप्पी में

इस ख़तरनाक चुप्पी में

□

संदीप श्रोत्रिय

"माँ और पिता को"

अनुक्रम

□

•

बिना थके

एक चिड़िया
उड़ती है
देर तक
इस से उस कोने तक।

नीचे हैं
वे लोग
जो उसे
यहाँ वहाँ कहीं नहीं
बैठने देते।
जिन्होंने बन्द किये हैं
दरवाज़े
खिड़कियाँ
रोशनदान।

जो उसे
बस पकड़ लेना चाहते है।
फिर वे
सुनेंगे उसका गाना
सिखायेंगे बोलना
वे उसे सभ्य बनायेंगे।

चिड़िया
अब तक इस विश्वास से
उड रही है
कि
एक बार
इतनी जोर से टकरायेगा
कि
दीवार गिर जाये।
हां, चिड़िया
ग़लत सोचती है।

फिर भी,
लगातार उड़ती चिड़िया
मुझे
अच्छी लगती है।

•

मैं

यह जो मैं हूँ
पहला मैं हूँ।
उधर है
दूसरा मैं
और
वह तीसरा
जो दूसरे के कन्धे पर
हाथ रखे खड़ा है
इस तरह
यदा-कदा
और भी कई मैं हैं
लेकिन
यह तीन तो हमेशा ही हैं।

उस भीड़ में
मैं था
और
वह दूसरा मैं भी
तभी
तीसरे ने
धायँ की आवाज़ से
दौड़ शुरू करवा दी
जो सबसे आगे था
मैं था।

वह दूसरा तो
भागा ही नहीं
मगर
मेरे चक्कर पूरा कर लेने से
पहले ही
तीसरे ने
दूसरे को
पहला ईनाम दिलवा दिया।

ऐसा
एक नहीं
कई बार हुआ
दूसरा मैं
पथरीली ज़मीन पर
मुझे

चित कर देने वाला ही था
कन्धे जमीन पर
न टिकने देने की कोशिश में
मैं छटपटा रहा था
तभी तीसरे ने
सीटी बजाकर
दूसरे का हाथ उठवा दिया।

यह जो
सूने गलियारे की सायँ-सायँ है,
मेरी है
वहाँ मैं हूँ
शेष जो तुम
हरदम महसूसते हो
वह मैं नहीं हूँ
दूसरे और, तीसरे का
षड्यन्त्र है।

मैं
वहाँ
नहीं हो पाता

प्रतीक्षा

इस
मीलों मील लम्बे
रेगिस्तान में
एक भट्टी है
हर वक्त लोहा पिघलाती हुई।

और हैं
रजनीगंधा के पौधे
जो आज तक
खिले भी नहीं
मरे भी नहीं।

एक नदी भी है
जो न जाने कब

बर्फ़ हो गई
लेकिन अब तक
सतह में
कई रंग-बिरंगी मछलियाँ
जिन्दा है

जिस दिन
पिघलता लोहा आकार लेगा
ग्लेशियर जरूर पिघलेगी।

उस शाम रेत बहुत ठण्डी होगी
और
रजनीगंधा महकेगी
दूर-दूर तक।

एक
ऐसी शाम के लिए
इन रेतीले दिनों में
मैं जिन्दा हूँ।

गुमशुदा

मुझे भनक मिली
कि मैं
फ़ीगज की सडकों
सिनेमा के गलियारों
या विक्रम पार्क के करीब
मिल सकता हूँ
लेकिन
मिल नहीं पाया
मेरे वहाँ पहुँचने से पहले
मैं
जा चुका था ।

उन लोगों के साथ जो
जुलूस
की शक्ल में
आसमान में नारे उगा रहे थे
कि एक ऐसी फ़सल उगे
जिस पर सिर्फ़
उनके लिए रोटियां उगें

वह अजनबी

आज तक
याद है
दीवार पर उगे
नन्हे पीपल को दिखा
तुमने कहा था माँ
"बेटा
यह भी
तेरी उमर का है
तू भी
इस जैसा बनना।"

और
अब वह

अपनी जड़ें
जमीन तक
पहुँचा चुका है
इधर मैं
लड़ ही रहा हूँ
संघर्षों की तपास झेलता
नहीं दे पाता
मैं
वैसी छाया।

हां
मैं उतना घना नहीं हूँ
लेकिन मां
यह पीपल
जिसे तुम पूज रही हो
अगर मेरी जगह होता
तो
पता नहीं होता भी
या नहीं,

हिदायत के खिलाफ़

पिता
तुमने कहा था
कि
छोटे रास्ते खतरनाक होते हैं।

तब
किसी ने नहीं बताया
कि लम्बा रास्ता
कितना लम्बा है।

इस
अनंत लम्बाई से
वह खतरनाक रास्ता
कहीं बेहतर है

जहाँ से
मंजिल
धुंधली ही सही
दीखती तो है
तो क्यों न
हर ख़तरे की संभावना को
लाद लूं
कंधों पर
जैसे
विक्रम ने लादा था
वैताल को ?

पिता
मैं
तुम्हारी हिदायत के खिलाफ़
इसी रास्ते पर
जाना चाहता हूँ ।

तैयारी

एक सीधी लड़ाई
तो तब भी जरूरी थी
जब तुम
अपने बेटे को सुना रहे थे
राजा की कहानी
और दे रहे थे
उसकी नन्ही आँखों के लिये
एक चमकीला सपना

तुम्हारी आँखों में तो
आज तक हिलता है
उस कहानी का सपना
जो तुम्हारे पिता ने

तुम्हे सुनाई थी
कि जब तुम भूखे थे
और घर में
खाने को कुछ नहीं था ।

यही सपना तुमने
अपने बच्चों को पुतलियों में बो दिया ।

एक पूरी कौम को
नकारा बनाने की साजिश
तुम्हारे हाथों बुनी जा रही है
और तुम्हे कुछ पता नही ।

तुम्हें याद होगा
कि उस कहानी में
सबसे सुखी आदमी के बदन पर
कमीज तक नहीं थी ।

और तुम कहानी के भरोसे
सच को बिना परखे
बोते रहे स्वयं को खेतों में
और वे
तय करते रहे
तुम्हारा भाव राजधानी मे
तुम
रटते रहे उनके दिए उसूल
और बूझते रहे

उनकी पहेलियाँ
बिना सोचे कि
दीमक तुम्हारी ही झोपड़ियाँ क्यों खाती हैं

अब सबसे ज्यादा ज़रूरी है
कि उनके उसूलों, कहानियों और पहेलियों का
सम्मोहन टूटे
और हम सब मिलकर
एक सीधी लड़ाई की तैयारी करें।

•

बड़ा होता हुआ बच्चा

बड़ा होता हुआ बच्चा
अँधेरे से डरता है
कि कौन है काली परत में
जो यकायक उसके सामने आ जायेगा ।

अपनी ही चप्पल से उछले कंकर से
बच्चा चमकता है
दोस्तों की कहानियों के भूत
उसके पीछे उतरते है
हाथ में जो नहीं होता
नमक, लकड़ी, माचिस, मिट्टी का तेल, दाल और आटा
तो
वह सरपट भाग जाता घर
यह फिर

बैठ जाता पुलिया पर ही
और बाट जोहता
इसी रास्ते पर जाने वाले किसी बड़े आदमी को
जो भूत से भिड़न्त मे
उसकी तरफ से लड़ सके।

पर अभी रुका ही नहीं जा सकता
कि
घर पर चूल्हा जलाने के लिये
उसका इंतजार करती
माँ है।
फिर, अब छोटा तो वह रहा नहीं
बड़ा हो चला है
उसने जब छोड़ ही दी
माँ की गोद और बाप की उँगली
तो उसे जवान होना ही है।

घर का सामान लेकर लौटता हुआ
यह बारह बरस का बच्चा
तय करता है
लड़ाई की भूमिका
कि अगर कोई
अभी आ गया सामने
खूब बड़ा ओवरकोट पहने
तो वह
सबसे पहले सड़क का पत्थर फेंकेगा उस पर
और माचिस से आग लगा देगा

उसके डरावने कपड़ों में
तब तो भाग खड़ा होगा
ओवरकोट वाला
उसे भागते देख
हँसेगा खूब

तेज तेज घर जाता हुआ बच्चा
बुदबुदा रहा है
अँधेरे में कोई नहीं
अँधेरा कुछ नहीं
घर पर माँ है
उसे बुलाती हुई माँ

बड़ा होता हुआ बच्चा
सचमुच बड़ा होता जा रहा है।

कटते हुए

दोनों लकीरें
खुश हैं
कि वे
एक बिन्दु पर
आपस में मिलती हैं।

नहीं जानती
कि
यही से शुरू होता है
एक दूसरे को काटने का क्रम।

और
उनके कटाव से
पैदा हुए कोण
अपने-अपने अंशमान
तलाशते रहेंगे
सालों साल तक।

हारते हुए

अकेले
शतरंज खेलते हुए
उसे पता है
सफ़ेद मोहरे
तीसरी चाल में
जीत जायेंगे।

और वह
एक बार फिर
स्वयं से हार जायेगा।

●

अलग-थलग

शून्य डिग्री के
बर्फ़ और पानी के बीच भी
गर्माहट का फर्क है।

मैंने
लगातार चाहा कि तुम
बर्फ न रहो
और तुम
हमेशा गुप्त ऊष्मा को
नकारती रहीं।

तुम्हारा
जमाव
और मेरा
बहाव
एक ही तापक्रम पर भी
अलग-थलग है।

•

सड़क किनारे सैमल

फूलों की राह
तकते-तकते
पत्ते
बुढा गये
और कर दिया समर्पण
पतझड़ को
फलने का स्वार्थ लिये।

फूल
बिछ गये सड़कों पर
लक्ष्य
प्रयास
नद्धि

की लुकाछिपी
कब तक देख पाऊँगा ?

सैमल-सा शिष्टाचार
कब तक निभाऊँगा ?
एक दिन क्या
रूई-सा ही
रेशे-रेशे में बिखर जाऊँगा ?

•

नदी—1

ओ नदी
कब तक बैठूं किनारे
कि तुम लाओगी
कभी
भरपूर पानी
तब
भंवरों की गुंजन
तितलियों के रंग
दौड़ती गिलहरी
खिलते फूल
बिखरते पराग
सब कुछ होगा मेरे पास

फिर
मेरे गाँव के बच्चे
प्यास बुझायेंगे
और
गीली रेत में
पैरों के निशान छोड़ती
उन्मुक्त गोरी
खेत की मेड तक जायेगी

ओ नदी
आज तक तो बैठा हूँ यहाँ
लेकिन तुम
अपने कहने के विपरीत
सूखती ही जा रही हो

•

नदी—2

मेरी खिड़की की
चौखट के उस पार
एक लड़की नदी हो गई।

पानी-सी बहती
और
रेत-सी
इस पल गर्म
उस पल सर्द।

नदी की आँखों में
मछलियाँ है,
जो थिरकती हैं यहाँ-वहाँ।

नदी के जिस्म मे
लहरें है
जो भिगो देती है
मुझे
खिड़की के इस पार भी।

कि नदी जम जाये कभी
तो
मैं फिसल जाऊँ धड़ाम से
उस छोर तक।

मेरे छूते ही
ग्लेशियर पिघल कर
वह चले नदी-सी।

नदी कि जो
मेरी खिड़की के पार खड़ी
लडकी है।

•

उसका आना

लड़की
जो एक दिन
स्कूल बस आने से पहले
खूब खेल लेना चाहती थी
गिल्लो डंडा
और छोड़ना भी नहीं चाहती थी
हाथ का ताजा फूल।

अभी-अभी
बदहवास-सी
सायकल पर

कटे बाल हवा में उड़ाते हुए
गुजरी है
कि उसे
समय पर दफ़्तर पहुँचना है।

दौड़ती सड़क और ताजा फूल की पकड़ के बीच
वह लड़की कहाँ है
जो पूरे कमरे में गमक जाती धूप-सी ?

क्या इस गर्म दोपहर में भी
उसका आना तय है ?

•

प्यार—1

उसके भीतर ही
एक सुरंग है
जहाँ बैठकर
वह
प्रेमिका का नाम
गुनगुनाता है
और भाग जाता है
सुरंग के उस कोने तक
भीतर ही भीतर जहाँ
सुरंग भी गाने लगती है
वही, वही नाम।

इसी गुंजाहट को
सुनते हुए

वह उगाता है
एक पेड
अमलतास का।
फिर, उसके झुरमुट में
एक अदद चाँद
टाँक देता है।

तब
जमीन पर बिखरते
चाँदनी के टिकोरे
जिनकी ठण्डी रोशनी में
वह प्रेमिका को
कई-कई तरह से
कई-कई बार प्यार करता है।

उस वक्त
अमलतास
चाँद
चाँदनी
और
लड़की
उसके निहायत अपने होते है।

वह
प्रेमिका से कहना चाहता है आओ !
एक घर बनाये
और आँगन में

चाँद
चाँदनी
और
अमलतास
सजायें।

प्यार—2

एक बार फिर
मैं और तुम
वैसे ही है।

एकदम वही नही !

तुम्हारी
आँखों में क्यों
टटोलता हूँ
वही सूनापन,
जो पलकों की कोर से
फिसल कर टूट गया था
पिछले दिनो।

तुमने गँवा दी
अपनी
खामोश गहराई
और मैंने भी
खोया है कुछ अपना तुममें ।

•

प्यार—3

न जाने कब
आ पसरा
एक प्रिज्म
जिसके
इस पार से भी
तुम
वैसी ही सुन्दर
दिखाई देती हो।

आँखें
उतनी ही गहरी
होंठ
वैसी ही नम

मगर
पहले से अलग ।
और टेढ़ी
स्थिति में
सब कुछ
है तो
पारदर्शी ही,
लेकिन है
कुछ
हम तुम के बीच
उधर
हमारी पहचान
एबॉर्शन के बाद
क्लीनिक
से
बाहर निकल रही है ।

•

पहचान

शाम के धुंधलके में
तेज रफ्तार से ही सही
गुज़रना जरूर उस सड़क से
जो तब बहुत सुनसान होती थी
वहाँ खड़ा वह बूढ़ा सेमल
अब भी खड़ा है वैसे ही
किनारे के खेत भी वही हैं
लेकिन
नहीं होंगे वे अंकुर
जो तुम्हारे होने भर से उगे थे।

तुम्हारे भीतर का भी
सब कुछ
जस का तस कहाँ रह गया ?

इस बस्ती में बहुत कुछ बदला है
तो भी बहुत कुछ है वैसा ही है।

फिर दस बरस कम नहीं होते ?

वक़्त गुजरा है
और
तुम्हारे ठीक ऊपर से होते हुए।

पता नही चला होगा तुम्हे
यहाँ आओगे
अपनी पुरानी बस्ती में
तो समझोगे कि तुमने क्या खोया, क्या पाया।

तुम्हारी शिनाख़्त ही बदल गई दोस्त !

कभी आओ
दस बरस बाद ही सही
इस बस्ती मे
कि जहाँ तुम थे और भरपूर थे।

•

बसंत

कुमार गंधर्व ने गाया राग बसंत
और पूरे कमरे में
बसंत लदक कर गमक गया।

कि जैसे १४ साल की लड़की यकायक २१ की हो
आ बैठी हो मेरे सामने।

लेकिन उधर
कमरे के बाहर
हर मौसम मे एक-सा शहर है
और ऐसा ही बसंत आता है।

•

नींद

यहाँ
अब घटनाओं के बीच से
साबूत निकल पाना संभव ही नही है।
बित्ता भर भी नहीं।

बंद पलकों के बीच
पुतलियों में फँसा
कोई दहशत भरा दृश्य
हर पल किरकता है।

नीद
किसी राजा के खजाने से
किसी को मिले तो मिले।

•

तस्वीरों कहो

दीवार पर टँगी
उस पुरानी तस्वीर से
यकायक
सफेद कबूतर कहाँ गुम हो गया

और दोनों हथेलियाँ वैसी ही खुली है
जहाँ से दिखता था
कि सफ़ेद झक कबूतर अभी-अभी उड़ा है।

क्या अचानक कबूतर
बड़ा और सयाना हो गया
और
हथेलियों के बीच उग रही साजिश को
भाँप उड़ लिया

या फिर
आज मौका पाकर तस्वीर के दूसरे हिस्से ने
उसकी हत्या कर
हर सबूत मिटा दिया
कि
कही कोई धब्बा तक नही।

मेरे कमरे की दूसरी तस्वीरो कहो
उसका क्या हुआ ?

तलाश—1

बार-बार
याद आती है
वह लड़की
जो
होठों पर
गुलाब फिसलाते हुए
भरपूर मुस्कान दे गई थी।

मैं
होठों
मुस्कान
और
फूल को

तलाशते हुए
बेतरह भागता हूँ।

हर मोड़ पर
मिलती है
कोई लड़की
जो सिर्फ
कमर से जाँघों तक
जिन्दा है।
जिसके साथ है
गर्म यात्राओं की संभावनाएँ,
इधर मुझे
गुलाब पर फिसलते
होठों की तलाश है।

तलाश—2

कल रात
अचानक
मुझे मिल गई
वह लड़की
जिसे मैं
अर्से से ढूंढ़ता था ।

तभी
मैंने जाना
कि
उसके पास भी
एक अदद कमर है
जाघें है
लेकिन

वह गुलाब कही नही
जो
होठो पर फिसलता था ।

मुझे नहीं पता था
कि
गुलाब
मुस्कान
कमर
और जाँघों के बीच
कोई गहरा रिश्ता है
जिसे
समझ पाने से पहले
वह
किसी के साथ
बद दरवाजे के उस पार
जा चुकी थी ।

इधर
मैं
उस मुस्कान और गर्म यात्रा
के बीच
कोई समीकरण खोजता रहा ।

समझ के बाद

बचपन से ही
मुझे
एक खेल दिखाया गया
चौड़ी हथेली पर
तेज़ी से फिसली
दो उँगलियों में से
छोटी को
इधर से उधर पहुँचाने का जादू ।

उम्र के साथ
मेरी पुतलियों के
ठहराव ने जाना
कि क्यों जरूरी है
इस जादू के लिए

[illegible] और हथेलियों का फैलाव
कि तुम उँगलियाँ कहाँ बदलते हो
कि सब उँगलियाँ बराबर क्यों नहीं होती ?

आज भी
मेरे आस-पास
फैली हुई हथेलियाँ
बदली जाती उँगलियाँ है।

वे चाहते है
कि मैं खुशी से
किलकारी मारूँ
और ताली बजाऊँ !

इधर मैं
खुली आँखों से
यह सब
देख रहा हूँ
फिलहाल।

•

आग—1

बाँस और बाँस
तेज हवा
फिर आग
फिर आग
पूरे जंगल में ।

चेहरों में जंगल में क्या
नसों में जमी ठण्ड
हथेलियों की रगड़ से उगी
चुटकी भर गर्मी
नाकाफ़ी है
रिश्तों की बर्फ़ पिघलाने में ।

हो नही पाता
कि नीला रंग
सिन्दूर-सा दहर उठे

अपने-अपने हिमालयों के बीच हम
फिर भी नहीं मानते
कि बाँस हमसे बहुत बड़े है
कि उनके पास आग है।

•

आग—2

तुम उनके साथ
खेलते हो
साँप सीढ़ी
और
कहते हो
दोगे उन्हें रोटी।
अगर
वे जीत गये

पालतू साँप
और घरेलू सीढ़ियाँ
तुम्हारी हैं
पीठ थपथपाकर

तुम देते हो
योजनाओं के तावीज़
जिन्हें
अपनी हाथ की हड्डियों पर
बाँधकर
वे
भूख भूल जाते है

सोचते हो
कि जब तक
वे भूखे है
और
साँप सीढी सुरक्षित है
तुम्हें कोई खतरा नही

भूलते हो
कि उनके पास आग है
आग जब फैलती है
काम नही आती सीढ़ियाँ
साथ नहीं देते देते साँप
और भस्म हो जाता है
सब कुछ

जिस दिन
तावीजों का सम्मोहन टूटेगा
आग जरूर फैलेगी ।

•

यह मीनार

कसमसाते है
मेरे पैर
यहाँ
ऊँची मीनार की छत पर।

कौन से
मनहूस पल
पैदा हुई थी
आकाश छू लेने की
बलवती इच्छा।
तब से
इस मीनार को
बनाते हुए

मैं
कई बार
मर चुका हूँ।

मैं
काट देना चाहता हूँ
हर वह बंधन
जो
मीनार से बाँधता है
मुझे
और
फाड़ देना चाहता हूँ
हर वह इश्तहार
जो
इस मीनार पर
मेरे हक को
चीख-चीख कर
उजागर करता है
हर सुबह
हर शाम
गिरा आता हूँ
कुछ ईंटे
कि
एक दिन
यह मीनार
धसक जाये

और
खत्म हो जाये
यह
लगातार कसमसाहट
यह तो
हमेशा कहते हो तुम
कि ऐसा होगा
बताओ
ऐसा कब होगा

•

बीमार शहर

वह बुझी-बुझी आँखों वाला लडका
जो चौराहे पर मुझे मिला
उसी ने मुझे बतलाया कि
मेरा शहर बीमार है

शहर की नब्ज तेज है
गलियाँ गर्माहट उलीचती है
सच
मेरा शहर बीमार है।

याद आता है मुझे
आँगन / गली / चबूतरा
अपना कूदना
चोट / खून / पट्टी

और
माँ की डाँट,
फिर
आँखों में उभरते हैं
भाले / फरसे / चाकू / लाठी / बंदूक / गोली
खून / लाशें / और चीखें
सच
मेरा शहर बहुत बीमार है।

मुझे उनके नाम की
हिचकी आती है
जो शहर के कंधों पर खड़े है
जिनकी सेहत के लिए
जरूरी थे
कुछ जुलूस / हंगामे / और कर्फ्यू
उन्हीं की तंदुरुस्ती की खातिर
मेरा शहर आज बीमार है।

तुम्हारा प्रश्न

बार-बार वही सवाल
दोहराते हो तुम
कि वह क्या है
जो वर्षों से

मेरे कंधे पर
अपना अस्तित्व बनाये है
और
हर बार मैं
टटोल कर, शिनाख्त कर लेना चाहता हूँ।

कंधों पर
मेंहदीली छुअन
और
अधर चिह्नों में
सिमटा नम विश्वास है।

शायद काँपती कमजोर बूढ़ी
हथेलियाँ है
जो
वर्षों से रिसती है।

सुनो!
कुछ मिट्टी सने हाथों की जकड़न
आँसुओं का खारापन
मरी हुई मुस्कानें भी हैं।

मेरे कंधों पर
एक छोटा-सा शहर उगा है
कुछ चौराहे गलियाँ / चबूतरे हैं
तुम फिर वही सवाल उछालते हो

यह सब क्या है
कि मेरा आसपास
किसी शवयात्रा में
तब्दील हो रहा है?
और मैं
हमेशा की तरह
कंधों पर टिकी
लाश को
पहचानने से नकारता हूँ।

•

माँ के लिए

उसने
हवा में
नमी सोखी
और
सूरज के साक्ष्य में
फट पड़ा
पेड़ बनने के लिए।

फिर
चट्टान को फोड़कर
घुस गया
पहाड़ के सीने में।
पत्ते /फूल / फल

पैदा किए
और
घोंसले भी उगाये
कि
कभी आयेगी
वह
रंगीन चिड़िया
जो
उसे
छोड़ गई थी
इस निपट सुनसान में।

उस
सुनहरी शाम
वह भी गायेगा
'माँ
मुझे ताकत दो
संघर्ष करने की।'

•

आँगन का पेड़

"ओ मेरे आँगन के पेड़
मैंने देखा
इधर आता
एक
बुलडोज़र
और
अभी वह
आ जायेगा
सब कुछ मिट्टी कर जाने को।

मैं
तुम संग खेला हूँ
चढ़ा / गिरा / कूदा हूँ

तुम्हारी फुंगियाँ तक
छुई हैं मैंने ।
तुम मेरे अपने हो
आओ
हम साथ-साथ भाग जाएँ"

और
पेड़ ने मना कर दिया ।
बोला--
'यह आँगन है मेरा भी
जड़ें जमी हैं
यहाँ पर मेरी भी,
आँगन / घर / दीवारों
के लिए
धराशाई हो जाऊँ
तो भी कम है'

मैं भागा
बुलडोजर / घर / आँगन
और पेड़ से दूर,
फिर भी मैंने
सुना और देखा
कि कब कैसे
वह
दहाड़ते हुए गिरा था

क्यों नहीं आया
पेड़ यहाँ से
क्या उसके
पैर नहीं थे ?

तो क्या
पैर भगाते हैं सबको ?

औरत !
क्यों नहीं मानी बात
उन्हीं की मैंने
जो
बुलडोज़र पर आते हैं
सब कुछ
मिट्टी कर जाने को ।

•

उम्र : १९वाँ जन्मदिन

तुम भरपूर वहशीपन से
कोंचते हो उसे
कि वह
झुलस कर
कब / कहाँ / और कैसे
गिरेगी ।

फिर तुम
उसे सजाओगे बालकनी में
और वह
तुम्हारे लिए
गायेगी / फुदकेगी ।

इस नगरनाक

लेकिन
ऐसा नहीं होगा ।

मेरी चिड़िया
गुनगुने डैनों के बावजूद
अपनी ऊँचाइयों पर सोचेगी
कि उसे
जमीन पर आ गिरने की जगह
आसमान ही में
राख हो जाना पसन्द है ।

•

उम्र : २६वाँ जन्मदिन

वारिश
हरियाली
फूल
रंग
खुशबू
के बीच
अब मेरी चिड़िया
जोर-जोर से गाती है।

नहीं देखती
जान-बूझकर
शिकारी की बंदूक को
जानती है

लेकिन
ऐसा नहीं होगा।

मेरी चिड़िया
सुलगते डैनों के बावजूद
अपनी ऊँचाइयाँ पा लेगी
कि उसे
जमीन पर आ गिरने की जगह
आकाश ही में
राख हो जाना पसन्द है।

●

उम्र : २६वाँ जन्मदिन

बारिश
हरियाली
फूल
रंग
खुशबू
के बीच
अब मेरी चिड़िया
ज़ोर-ज़ोर से गाती है ।

नहीं देखती
जान-बूझकर
शिकारी की बंदूक को
जानती है

कि गीले पंख
नहीं बचा सकते
उसे
गोली की मार से

इसीलिए
धमाके से पहले
बहुत मस्ती में
ज़ोर-ज़ोर से गाती है।

●

उम्र : पैंतीस के बाद कोई भी दिन

क्या हो गया
मेरे देश की हवाओं को
कि अब
मेरी चिड़िया
उड ही नहीं पाती।

एक दिन
रह गई
चोंच उसकी
जस की तस खुली
कि वह
घोंसले के लिए
तिनके ले जाने में
है नितान्त असमर्थ।

आज
पूरी की पूरी चिड़िया
पथरा गई
डैने सख्त हो गए हैं
और वह
जमीन पर आ गिरी है
सर / पर / धड़
सब अलग।

अपनी चिड़िया की खोज में
पाता हूँ
अपनी / तुम्हारी / हम सबकी
टूटी चिड़ियों के
सर / पर / धड़

क्या यह पथरीली / मुर्दा
चिड़ियों का देश है ?

•

इन सीढ़ियों के उस छोर पर क्या है ?

एक बंद दरवाजा
बिजली की घंटी का बटन
एक जंजीर
और उससे बँधा खतरनाक कुत्ता।

या फिर
एक गलियारा है
और है एक खूबसूरत लड़की
तराशे हुए खुले बालों को
तरह-तरह से बाँधती हुई।

शायद इस जीने के बाद
बंद खिड़कियों वाला कमरा है

जिसमें एक आदमी एक औरत से
प्यार करने में व्यस्त है।

या वहाँ महँगे कालीन वाला फर्श
मेज पर सजा बडा अक्वेरियम
और थिरकती हुई
रंग-बिरंगी मछलियाँ है।

या फिर
ऊपर नयी खुली छत है
जहाँ सुंदर फूल
और कैक्टस हैं तरह-तरह के।

यहाँ से दिखाई दे रही
इस पाँच आधी-अधूरी सीढ़ियों के पार
नानी की पहेली है
जो मुझसे कभी नहीं सुलझी।

मगर यह तय है कि
वहाँ नही है
रात में पतग उड़ाने वाला बच्चा
जो पतग की रंगत और लचक नही देख पाता
बस वज़न को महसूस करता है।
ऊपर नहीं है वह औरत
जिसे तगाड़ी ढोते समय
ठेकेदार यहाँ-वहाँ नोचता है।

और नही है
रात भर लम्बी खाँसी
ठण्डी हथेलियों का सौदा
और आने पैसे का हिसाब ।

वहाँ बिलकुल नहीं है
हरी काँटेदार नागफनी की बड़ी झाड़ी
जिस पर बेतरतीब मगर ढेरों
बड़े-बड़े लाल फूल खिलते है ।

जब यह सब इस पहेली के अते-पते में भी नहीं है
तो फिर
इसे बूझने से क्या फायदा ?

•

महामहिम के दरबार में

फ़ानूस को वह खोखली आँखों से
घूरता है
कि फानूस मे सैकड़ों कांच के टुकड़े है
जिनसे सूरज
सतरगा देखा जा सकता है
ऐसा एक भी टुकड़ा
मिल जाये
तो मुट्ठी में हो कई इंद्रधनुष।

और जो पूरा फानूस हाथ आ जाये
तो कांच के कई सतहों वाले
ढेरों टुकड़े
झोली में भरकर
वह बाँट दे बस्ती के बच्चों मे

कि लो
ग़ौर से देखो रंग-बिरंगा सूरज।

लेकिन चौंधियाती हुई ऐसी
मुस्कान
और इतने
अचंभे भरे दिन के लिये
सिर्फ़ फ़ानूस के टुकड़े बहुत नहीं होंगे।

बस्ती में काँच के पार
देखने को सिर्फ़ अँधेरा है
अँधेरे को कैसे ही घूर लो
वह रहेगा
जस का तस काला
अभी
उसकी लड़ाई काँच के टुकड़ों के लिये कम
और
उस आग के गोले के लिये ज़्यादा है।

•

लाल मछली

जब यकायक
नदी सूख गई
तो लाल मछली को
मर जाना चाहिए था
लेकिन उसने पैरों को
जन्म दे दिया
जो
उसे नदी से अलग ढो रहे है

वह
तलाशती है
सूखी नदी के किनारे
प्यासे सफेद कबूतर की लाश

वह
तुम्हारा पर्दाफाश कर ही देगी
तुम
जो सफ़ेद कबूतर के नाम पर
न जाने क्या बेचते हो
तुम्हारे तमाम षड्यंत्र
लाल मछली को
मारने में
नपुंसक साबित हुए है
अब मन सोचो
कि तुम -
लकवा बन टूट पड़ोगे
उसके पैरों पर
वह
पैरों की तरह
डैने भी उगा लेगी
तुम कब तक बचोगे ?

०

इस ख़तरनाक चुप्पी में

इस खतरनाक चुप्पी मे
भोर नही होती
चिड़ियाँ नही गाती
और सड़क से
कोई गन्ना लदी बैलगाड़ी भी
नही गुजरती।

शहर की अकेली नदी
जमी जा रही है।

यहाँ
जो और जितना घट गया
क्या मेरे देश के लोगों ने
जान लिया है ?

कि टिड्डियों के डर से खेत सूख गये
अब पानी का रंग लाल है
और मछलियाँ रेत में जा धँसी हैं

मेरे देशवासियो !
क्या तुम्हें
यही पता है
कि स्थिति नियंत्रण में है ।

•

शब्द

इसी अँधेरे में
काले हाथों वाले स्याह इरादे
किसी भी पल
तुम्हे
खुरदरी चट्टान पर
दचीक देंगे जोर से।

भाषा का इस्तेमाल
दियासलाई सा करो
शब्द लो
जलाओ तीलियों की मानिंद
और सावधानी से
ऊबड़-खाबड़ सीढ़ियाँ
चढो फ़ौरन !

कहो गलत को गलत
बुरे को बुरा
कम से कम
चीखो तो एक बार जोर से
कि वे जानें
गूंगे नहीं हो तुम ,

इससे पहले कि वे
तुम्हारी पुतलियाँ
तेजाब में घोल दें।

अपनी घिघियाहट को शब्द दो
शब्द जो तीलियाँ हैं।

•

होना

जैसे कि मैंने नही देखा
किसी झील को ग्लेशियर बनते हुए
किसी पहाड़ को लावा उगलते हुए
और मछलियों को जहाज उलटते हुए।
हाँ मैंने नही देखे वे कबूतर
जो बहेलिए का जाल लेकर उड़ जाते है।

लेकिन एक दिन देखूंगा जरूर

और सिर्फ़ दर्शक की तरह नही
वल्कि अंदर घुस कर।
कि, मेरी लड़ाई तेज़ी से
मेरे आसपास बुनी जा रही है
और मैं उसमें हूँ पूरी तरह
उससे अलग होना संभव जो नहीं है।

•